www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-2* *February 2025***

आधुनिक समाज में रामकथा का प्रभाव

डॉ0 सीमा रानी प्रधान

सहायक प्राध्यापक, हिंदी, शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय महासमुंद, छ.ग.

डॉ0 दुर्गावती भारतीय

सहायक प्राध्यापक, हिंदी, शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद, छ.ग.

सारांश

वर्तमान में संपूर्ण विश्व आधुनिकता एवं प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में है। अनमोल रिश्तों की बोली लग रही है।अपने कर्तव्य को नजरअंदाज कर सब अपने अधिकार के प्रति जागृत हैं। ऐसे समय में समाज को सही दिशा देने के लिए रामकथा का श्रवण,अध्ययन और मनन आवश्यक है । जन – जन तक राम कथा के पात्रों के आदर्श चरित्र को आधुनिकताबोध के साथ पहुँचाना नैतिक कर्तव्य ही नहीं,जिम्मेदारी भी है।

रामकथा में भाइयों ने एक दूसरे के लिए राजपाट की त्याग कर दी। जहां भरत ने अपने बड़े भाई के चरण पादुका को शिरोधार्य कर राजकाज किया,वहां लक्ष्मण ने बड़े भाई के साथ चौदह वर्ष का वनवास चुन लिया।रामराज्य का आधार समानता और समरसता था।जनकल्याण ही सर्वप्रमुख था।रामकथा हमें आदर्श माता पिता भाई,पत्नी,पुत्र बनने का मार्ग बताता है।रामकथा के माध्यम से बच्चों में श्रेष्ठ मूल्य विकसित किए जा सकते हैं।राम के उदात्त चरित्र का वर्णन विश्व के प्रत्येक कोने में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। आधुनिक समाज में रामकथा का महत्व और भी बढ़ जाता है। रामकथा में मानव प्रेम के साथ साथ प्रकृति और वन्यजीवों के प्रति भी प्रेम और आदर का भाव है। रामकथा श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत है।

बीज शब्द– राम, रामकथा, भारतीय समाज, प्रेम, समानता, समरसता, प्रासंगिकता, मानवीय मूल्य

प्रस्तावना

हमारी भारतीय संस्कृति में हमेशा से धर्म का स्थान सर्वोपरि रहा है। धर्म का मूल वेदग्रंथों को माना गया है। हमारे वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) साहित्य में सर्वप्रथम रामकथा का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। वैदिक एवं संस्कृत भाषा के साहित्य में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के शील, शक्ति एवं सौन्दर्य मण्डित अलौकिक व्यक्तित्व ने पुराकाल से लेकर आज तक जनमानस को आकृष्ट किया है। भारतीय ऋषि–मुनियों, मनीषियों तथा विद्वत्जनों की रामकथा परक धारणा वैदिक विधानों के अन्तर्गत स्थापित है। वेदों की प्राचीनता सम्पूर्ण विश्व को विदित है। ''वेदों के सृजन को लेकर विद्वानों में मत–भिन्नता है। फिर भी रामकथा परम्परा के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करने वाले विद्वानों के मतानुसार प्रभु 'श्री राम' उत्तर–वैदिक काल के दिव्य महापुरुष माने जाते हैं। वेदों में अनेक स्थलों पर 'राम' शब्द आया है परन्तु उसका आशय दशरथ नन्दन राम से नहीं है।''[1] साहित्यिक विद्वानों के अनुसार बीसवीं सदी का राम कथात्मक साहित्य वैचारिक नवजागरण एवं भावनात्मक उन्मेष के क्रमिक विकास का प्रतिफलन है। विषय विस्तार– रामकथा एवं राम नाम सम्पूर्ण विश्व में अनेक रूपों से प्रचलित हैं। राम नाम जितना प्रभाव जनमानस में पड़ा दूसरा कोई और नाम का नहीं पड़ा। हालांकि स्वरूप अलग–अलग हैं। फादर कामिल बुल्के ने राम के चार प्रकार के रूपों का उल्लेख किया है।

ऋग्वेद में राम का उल्लेख दुःशीम, पृथवान् और वेन इन प्रतापी यजमानों के साथ प्रयुक्त हुआ है। इसके आधार पर यह सिद्ध होता है कि राम नाम के कोई राजा होंगे। राम कथा एवं राम नाम संपूर्ण विश्व में अनेक रूपों में प्रचलित है। राम नाम का जितना प्रभाव जनमानस में पड़ा, दूसरा किसी का नहीं पड़ा। हालांकि उनका स्वरूप प्रत्येक समाज व काल में भिन्न है–

''ऐतरेय ब्राह्मण में राम मार्गवेय और जनमेजय के विषय में एक कथा प्राप्त होती है। इससे यह प्रमाणित होता है कि श्याम वर्ण कुल के ब्राह्मण और जनमेजय के वे समकालीन थे।''[2]

प्रत्येक काल में राम का वर्णन भिन्न–भिन्न हुआ है। कहीं पर उनका वर्णन राजा के रूप में तो कहीं शिष्य और कहीं शिक्षक के रूप में हुआ है। सतपथ ब्राह्मण के अनुसार राम याज्ञवल्क्य के समय के माने जाते हैं। ''सतपथ ब्राह्मण में अंसुग्रह नामक यज्ञ के तत्व विचार विनिमय होने पर अन्य आचार्यों के मतों के साथ–साथ राम औपतस्विनि के मत का भी उल्लेख मिलता है जिससे पता चलता है कि वह इनके तथा याज्ञवल्क्य के समकालीन थे।''[3] जैमिनीय उपनिषद में ब्राह्मण के दो स्थलों पर राम क्रातुजातेय वैयाध्रपद्य का उल्लेख मिलता है। दोनों बार उसका नाम दार्शनिक शिक्षा देने वालों की नामावली में दिया जाता है। दोनों स्थलों पर वह रांग कात्ययानि आत्रेय का शिष्य है और शंख वभ्रव्य का शिक्षक है। इस प्रकार प्राचीनतम वैदिककाल में ही राजाओं तथा ब्राह्मण ग्रंथों में राम का नाम प्रचलित था। रामकथा की दृष्टि से रामायण (वाल्मीकि कृत) संस्कृत का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है। यह समस्त रामायण ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ तथा लोकप्रिय एवं प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। विश्व के अधिकतर अन्य रामकथा से संबंधित ग्रंथों का मूल रामायण ही है। रामायण के मूल स्वरूप में अनेक मत–भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं–

''चरित रघुनाथस्य शतकोटि प्राविस्तरम्''[4]

रामकथा का उल्लेख हमें रामायण ग्रंथ में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त रामकथा का उल्लेख हमें महाभारत ग्रंथ में मिलता है। ''सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक संसार के किसी भी साहित्य में वाल्मीकि रामायण जैसा सर्वांग सुन्दर ग्रंथ नहीं लिखा गया है।''[5] इसीलिए संस्कृत भाषा में इस ग्रंथ को इस प्रकार वर्णित किया गया है–

''रामायण आदि काव्य सर्व वेदार्थ सन्मंत।
सर्व पाप हरं पुण्य सर्व दुःख निवर्हणम्।।''[6]

रामायण वेद तुल्य है। इसके मनन–पठन एवं श्रवण आदि से मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होता है। वाल्मीकि आदिकवि है तथा समस्त विश्व के कवि गुरू हैं। रामायण हमें रीति–रिवाज, नीति, धर्म, कर्तव्य तथा सत्य पथ आदि की शिक्षा प्रदान करती है। रामायण भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता को स्पष्ट परिभाषित करती है।

''रामायण देव ग्रंथ की अपेक्षा मानव ग्रंथ है। इसमें समस्त पात्र साधारण मानव की ही भाँति हैं। इनमें प्रेम, करुणा, द्वेष, ईर्ष्या तथा घृणा आदि समस्त तत्व विद्यमान हैं। रामायण ग्रंथ में धर्म–अर्थ–काम तथा मोक्ष आदि का विस्तृत ढंग से वर्णन किया गया है।''[7] रामायण में राम के रूप में मानव के उत्कृष्ट एवं दिव्य चरित्रों का चिरस्थायी स्वरूप अंकित किया गया है। यही कारण है कि आज भी मनुष्य प्रेमभाव से भक्तिपूर्वक श्रद्धावनत् होकर इसे देव रूप में स्वीकार करता है। यह काव्य चिन्तन सार्वभौम, सनातन, अनादि तथा अनन्त साहित्य तत्वों से गुंफित है। रामायण में मानव जीवन मूल्यों के अनुसंधान का आयोजन है। वाल्मीकि रामायण में मनुष्यत्व को प्राथमिकता प्रदान की गयी है। इस ग्रंथ में आसुरी जीवन–दर्शनों के जिस द्वन्द्व को उद्घाटित किया गया है वह भी मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ही आधारित है। रावण एक विरोधी आदर्श या प्रति आदर्श का प्रतीक है, वह खलनायक नहीं है। राम तथा रावण का संघर्ष दो विश्वव्यापी चरम आदर्शों का द्वन्द्व है न कि धर्म के विरुद्ध अधर्म का संघर्ष। रामायण हमारे देश भारतवर्ष के प्राचीनतम भाई–चारे एवं पारिवारिक आदर्श को प्रस्तुत करती है। परिवार के पात्रों का विश्लेषण इस प्रकार है–

पिता के प्रति पुत्र का आज्ञा पालन, भाई के भातृप्रेम के अंतर्गत भाई का आत्मत्याग, तथा पति एवं पत्नी का परस्पर आत्मनिष्ठा आदि आदर्श अपने मौलिक रूप में रामायण में विद्यमान है। यही कारण है कि इसके प्रतिफल स्वरूप आदि कवि वाल्मीकि ने इसे आत्म बलिदान, स्वार्थ–त्याग, सहिष्णुता, प्रेम, भक्ति एवं श्रद्धा के मूल मानकों के रूप में ही स्वीकार किया है। व्यक्ति से व्यक्ति के अन्तः संबंधों का ऐसा विराट स्वरूप, व्यापक चित्रण तथा

वर्णनीय विषय–युक्त ग्रंथ दुनिया में अन्यत्र नहीं है। रामायण में पात्र और घटनाएँ यथार्थ की पृष्ठभूमि पर घटित हुई हैं तथा इनमें मानव एवं बाह्य प्रकृति का आकृत्रिम रूप दृष्टिगोचर होता है। रामायण ग्रंथ निःसन्देह भारतीय संस्कृति के आदिम आलोक की महान उपलब्धि है। भारतवर्ष की अनेक संस्कृतियों, भाषाओं और जातियों में लोकगीतों के माध्यम से सम्पूर्ण जन–मानस ने अपने सुख–दुःख रामायण को सामने रखकर प्रस्तुत किये हैं। यथा–

''दशरथ बगिया लगवले लखन आए ढूंढ ले हो।
प्यारे रघुवर धनिया गरभ से हरिनवाँ लरवाले ले।।
XXX
कर जोड़ी हरिनी अरज करइ सुन कोसिला रानी हो।
रानी सीता के होईहैं नंदलाल हमहीं कुछ दी हब हो।।''[8]

इस लोकगीत में राम की महिमा का बखान इस प्रकार किया गया है–

राम के भीजें मुकुटवा लखन सिर पटुकवा हो रामा।
मोरी सीता के भीजें सेनुरवा, लवटि घर आवैं हो राम।।
XXX
भीजै त भीजै पटुकवा, मुकुटवान भीजइ हो।
भीजैत भीजै मुकुटवा, सेनुरवा न भीजइ हो।।''[9]

आदिकवि वाल्मीकि ने वाल्मीकि रामायण में रामकथा को विस्तारपूर्वक सातकाण्डों (बालकाण्ड 77 सर्ग, अयोध्या काण्ड 119 सर्ग, अरण्यकाण्ड 75 सर्ग, किष्किन्धाकाण्ड 67 सर्ग, सुन्दर–काण्ड 68 सर्ग, युद्धकाण्ड 128 सर्ग तथा उत्तरकाण्ड 111 सर्ग कुल श्लोक संख्या 24000) में वर्णित किया है। इसमें वाल्मीकि जी ने भगवान श्रीराम जी की रामकथा को बाल्यकाल से लेकर रामवनगमन, राम–रावण युद्ध, पुनः अयोध्या में आगमन, रामराज्याभिषेक के पश्चात् समाज में मर्यादा को बनाये रखने के लिए सीता का परित्याग तथा वाल्मीकि आश्रम में लव–कुश के जन्म की घटनाओं के साथ–ही–साथ अयोध्यावासियों सहित वैकुण्ठधाम के लिए प्रस्थान एवं माता सीता का पृथ्वी माता की गोद में समाना आदि को वर्णित किया है। विश्व में रामायण ग्रंथों की संख्या 100 करोड़ से भी अधिक है।

हमारे देश भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य में अलग–अलग भाषाओं एवं ग्रंथों में रामकथा का उल्लेख हुआ है। इसके अतिरिक्त आनंद रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, योग वशिष्ठ रामायण, प्रेम रामायण, राधेश्याम रामायण, विचित्र रामायण, संवृत रामायण कश्मीरी रामायण, श्रीरामचरितमानस, वेद, महाभारत जातक कथाओं, बौद्ध चरित, जैन ग्रंथों के अतिरिक्त विश्व के अनेक ग्रंथों में रामकथा को पृथक–पृथक कथानकों के आधार पर विश्लेषित एवं वर्णित किया गया है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार रामकथा का प्रार्दुभाव भगवान शिव एवं माता पार्वती के सत्संग से प्रारम्भ हुआ है इसके पश्चात् काग भुसुण्डित–गरुड़, याज्ञवल्क्य भारद्वाज तदनंतर तुलसीदास स्वयं द्वारा श्रोता–वक्ता के माध्यम से रामकथा को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

अनेक विद्वानों ने समाज के सामने रामकथा का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस पावन ग्रंथ से समाज को यह शिक्षा मिलती है कि–परिवार में माता–पिता की आज्ञा का पालन करना, भाई से प्रेम करना, दुष्ट व्यक्ति को समाप्त करना, अपने से छोटे एवं निर्बल लोगों की सहायता एवं उन पर दया करना तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह कि हमेशा सत्य बोलना और सच्चे मार्ग पर चलने से ही व्यक्ति एवं समाज सुखी रह सकता है। जटायु प्रसंग, सुग्रीव से मित्रता आदि प्रसंगों के वन्य जीव संरक्षण एवं दयाभाव का संदेश समाज को मिलता है। पर्वतों की पूजा, गंगा नदी का संरक्ष प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्ष का संदेश है।

संदर्भ–

1.शर्मा,सौमित्र.हिंदी के रामकथा परक उपन्यास एवं रामगाथा. कानपुर : सरस्वती प्रकाशन,सं.2011,पृ 17.

2.आगरा, हरिणी रानी. बीसवीं सदी का रामकथा साहित्य. रूरा कानपुर देहात : समता प्रकाशन ,सं.2014, पृ.15.

3. वही, पृ.15
4. वही, पृ. 17
5. कल्याण विशेषांक– रामांक, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. 483
6. स्कन्द पुराण– उत्तर रामायण–महर्षि व्यास, गीताप्रेस गोरखपुर पृ. 5–6
7. मित्रा, नेहा.वाल्मीकि रामायण में तप का स्वरूप. कानपुररूसंकल्प प्रकाशन, सं. 2025. पृ.10.
8. कुमार, आलोक. (संपा.) छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में श्रीराम.कानपुरः उत्कर्ष पब्लिकशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. सं 2023. पृ. 15.
9. वही, पृ. 15

Cite this Article-

डॉ0 सीमा रानी प्रधान, डॉ0 दुर्गावती भारतीय, "आधुनिक समाज में रामकथा का प्रभाव", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:02, February 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i2001
Published Date- 02 February 2025